Original Research Paper

दर्षनषास्त्र

भारतीय दर्षन में षंकराचार्य का अज्ञान, अविद्या एवं माया

डॉ0 चेतन प्रभा सिंह	दर्षनषास्त्र विभाग, आगरा कॉलेज, एम0 जी0 रोड, आगरा, पिन – 282002
डॉ0 आर0 पी0 वर्मा	दर्षनषास्त्र विभाग, आगरा कॉलेज, एम0 जी0 रोड, आगरा, पिन – 282002

KEYWORDS

प्रस्तावना

भारतीय दर्षन में षंकर ने माया षब्द का अर्थ अज्ञान, अविद्या, मिथ्या, आभास आदि माना है। सभी प्रकार की माया भ्रान्ति का कारण अज्ञान है। यह अज्ञान अनादि है, भाव रुप है। इसे ज्ञान के द्वारा दूर किया जा सकता है। अज्ञान के लिये कहा है अनादि भ्राव रुपत्वे सति ज्ञान निवर्त्यत्वम् किसी भी वस्तु के प्रत्यक्ष के लिये अज्ञान को दूर करना आवष्यक है।

परिभाशा

अज्ञान की परिभाशा हम यह कह कर करते हैं कि अज्ञान अनिष्चित है, इसका ना भाव है, ना अभाव है, उसको हम प्रत्यक्ष अनुभव से भी जानते हैं। जब हम यह कहते हैं कि मैं अपने आपको या किसी को नहीं जानता, तब हम अज्ञान को प्रत्यक्ष रुप से देखते हैं। इसी प्रकार जब हम यह कहते हैं कि मैं गहरी निन्द्रा में सो रहा था, मुझे कुछ पता नहीं है। तब भी हम अज्ञान की स्पश्ट सत्ता स्वीकार करते हैं। जैसे– अंधकार में प्रकाष की किरण प्रकट होती है, उसी प्रकार अज्ञान अंधकार के आवरण को हटाने वाले ज्ञान के प्रकाष का उदय होता है। अज्ञान का आधार चित्त प्रकाषमय है, जब षुद्ध चित्त रुप मनुश्य की चित्तवृत्तियों द्वारा धारण किया जाता है, तब अज्ञान का विनाष हो जाता है, इसके पूर्व चित्त अज्ञान के आवरण में छिपा रहता है।

माया का अर्थ

षंकर के दर्षन में माया और अविद्या का प्रयोग एक ही अर्थ में हुआ है, जिस प्रकार आत्मा और ब्रहम में तादात्म्य है। उसी प्रकार माया, अविद्या, अज्ञान, अध्यास, अध्यारोप, भ्रान्ति, विवर्त, भ्रम, नामरुप, अव्यक्त, मूल प्रकृति आदि षब्दों का एक ही अर्थ में प्रयोग किया गया है। किन्तु बाद में वेदान्तियों ने माया और अविद्या में भेद कर दिया। उनका कहना है कि माया भावात्मक है जबकि अविद्या निशेधात्मक है।

माया ईष्वर को प्रभावित करती है जबकि अविद्या जीव को प्रभावित करती है। माया का निर्माण मूलतः सत्व गुण से हुआ है जबकि अविद्या का निर्माण सत्व, रज तथा तम गुणों से हुआ है। षंकराचार्य का कहना है कि माया ब्रहम में निवास करती है यद्यपि माया का आश्रय ब्रहम है फिर भी ब्रहम माया से प्रभावित नहीं होता है। जिस प्रकार जादूगर जादू की प्रवीणता से स्वयं प्रभावित नहीं होता, उसी प्रकार माया भी ब्रहम को प्रभावित करने में असफल रहती है। ब्रहम अनादि है, माया और ब्रहम में तादात्म्य का सम्बन्ध है। माया ब्रहम की षक्ति है, जिसके आधार पर वह विष्व का निर्माण करता है।

माया की विषेशतायें

माया की दो मूल विषेशतायें हैं –

1– आवरण ;सत् को ढक लेनाद्ध अर्थात् माया वस्तुओं के वास्तविक रुप को ढक लेना। माया के कारण वस्तु पर आवरण पड़ जाता है, जिस प्रकार रस्सी में दिखाई देने वाला साँप रस्सी के वास्तविक स्वरुप पर पर्दा डाल देता है, माया का यह निशेधात्मक कार्य है।

2– विक्षेप अर्थात् माया सत्य के स्थान पर भिन्न वस्तु को उपस्थित करती है। माया सिर्फ रस्सी के वास्तविक स्वरुप को नहीं ढकती बल्कि रस्सी के स्थान पर साँप की प्रतीति भी उपस्थित करती है।

षंकराचार्य के अनुसार माया की अनेक विषेशतायें हैं। माया की मुख्य विषेशताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है –

- *माया अध्यास रुप है जो जहाँ वस्तु नहीं है, वहाँ उस वस्तु को कल्पित करना अध्यास कहलाता है। जिस प्रकार रज्जु में सर्प की और सीप में चाँदी का आरोपण होता है। उसी प्रकार निर्गुण ब्रहम में जगत् आभासित होता है। चूँकि अध्यास माया के कारण होता है, इसलिये माया को मूला–विद्या भी कहा जाता है।*
- *माया विवर्तमात्र है। माया ब्रहम का विवर्त है जो व्यावहारिक जगत् में दिखाई देता है।*
- *माया ब्रहम की षक्ति है, जिसके कारण वह नाना रुपात्मक जगत् प्रतीत होता है।*
- *माया अनिर्वचनीय है क्योंकि वह ना सत् है, ना असत् है, ना दोनों है। वह सत् नहीं है क्योंकि ब्रहम से भिन्न उसकी कोई सत्ता नहीं है। वह असत् भी नहीं है क्योंकि वह नाना रुपात्मक जगत् को उपस्थित करती है। उसे सत् और असत् दोनों नहीं कहा जा सकता क्योंकि ऐसा कहना आत्म–व्याघाती होगा। इसलिये माया को अनिर्वचनीय कहा गया है।*
- *माया का आश्रय स्थान ब्रहम है। किन्तु ब्रहम माया की अपूर्णता से अछूता रहता है। माया ब्रहम को उसी प्रकार प्रभावित नहीं करती है, जिस प्रकार नीला रंग आकाष पर आरोपित होने पर भी आकाष को प्रभावित नहीं करता है।*
- *माया अनन्त नहीं है, वह अस्थायी है। माया का अन्त ज्ञान से होता है। जिस प्रकार रस्सी का ज्ञान होते ही रस्सी–सर्प भ्रम नश्ट हो जाता है, उसी प्रकार ज्ञान का उदय होते ही माया का विनाष हो जाता है।*
- *माया अव्यक्त और भौतिक है। सूक्ष्म भूत स्वरुप होने के कारण वह अव्यक्त है एवं अनादि है।*
- *माया भावरुप है। माया को भावरुप यह दिखलाने के लिये कहा गया है क्योंकि यह केवल निशेधात्मक नहीं है। वास्तव में माया के दो पक्ष हैं– निशेधात्मक और भावात्मक। निशेधात्मक पक्ष में वह सत्य का आवरण है क्योंकि वह उस पर पर्दा डालता है। भावात्मक पक्ष में वह ब्रहम के विक्षेप के रुप में जगत् की सृश्टि करती है। इसलिये वह अज्ञान तथा मिथ्या दोनों है।*

डॉ0 राधाकृश्णन के अनुसार षंकर के दर्षन में माया षब्द छः अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। विष्व स्वतः अपनी व्याख्या करने में असमर्थ है जिसके फलस्वरुप विष्व का परतन्त्र रुप दिखाई देता है, जिसकी व्याख्या माया के द्वारा हुई है। ब्रहम और जगत् के सम्बन्ध की व्याख्या के लिये माया का प्रयोग हुआ है। ब्रहम विष्व का कारण कहा जाता है क्योंकि विष्व ब्रहम पर आरोपित किया गया है, विष्व जो कि ब्रहम पर आश्रित है, वह माया है। ईष्वर की षक्ति का रुपान्तर विष्व के रुप में होता है, जिसे माया कहा जाता है।

सन्दर्भ सूची

1– डॉ0 राधाकृश्णन, भारतीय दर्षन ;भाग–1द्ध, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ;2004द्ध ।
2– डॉ0 हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, भारतीय दर्षन की रुपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ;1992द्ध ।
3– डॉ0 चन्द्रधर षर्मा, भारतीय दर्षन ;आलोचन और अनुषीलनद्ध मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी ;1989द्ध ।
4– डॉ0 एस0 एन0 दासगुप्ता, भारतीय दर्षन का इतिहास ;भाग–1द्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ;1988द्ध ।
5– डॉ0 बी0 एन0 सिंह, भारतीय दर्षन, हिन्दू विष्वविद्यालय, वाराणसी ;1986द्ध ।